International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 01, January 2023
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

पेशवा शक्ति एवं मराठा साम्राज्य : एक अध्ययन

डॉ राजकुमार
एसोसिएट प्रोफेसर इतिहास,
शहीद उधम सिंह राजकीय महाविद्यालय, मटक माजरी, इंद्री करनाल

डॉ सतीश कुमार भारद्वाज
एसोसिएट प्रोफेसर, स्वास्थय एवम शारीरिक शिक्षा विभाग,
शहीद उधम सिंह राजकीय महाविद्यालय, मटक माजरी, इंद्री, करनाल

महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी के नेतृत्व में मराठा शक्ति का उदय हुआ जोकि एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। इस शक्ति के निर्माण में गत 500 वर्षों का राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास छिपा है।

[1] मराठा शक्ति के उदय में छत्रपति शिवाजी के साहस, समझ तथा संगठनात्मक क्षमता ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने शुरू में ही स्वराज की अवधारणा रखी, जोकि उन्हें उत्तराधिकार में माता जीजाबाई, पिता शाहजी भौंसले तथा कारभारी दादा कोंडदेव से प्राप्त हुई थी। छत्रपति शिवाजी ने आम जनमानस को स्वराज का अर्थ बताया और स्वराज के लिए जीने एवं जीतने की इच्छा साथियों में विकसित की।[2] जिसके परिणामस्वरूप विशाल मराठा साम्राज्य की स्थापना हुई।

छत्रपति शिवाजी की मृत्यु के बाद मराठा साम्राज्य पर संकट के बादल छा गए। उनके बड़े पुत्र संभाजी को औरंगजेब ने बंदी बनाकर 11 मार्च, 1689 ई॰ को बड़ी क्रूरता से प्राण दण्ड दे दिया।[3] संभाजी की पत्नी एवं पुत्र शाहू को भी मुगलों ने नजरबंद कर लिया था। 1689 ई॰

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

से 1700 ई॰ तक छत्रपति शिवाजी के दूसरे पुत्र राजाराम ने मराठा साम्राज्य को नष्ट होने से बचाए रखा। राजाराम के बाद उनकी पत्नी ताराबाई ने 1707 ई॰ तक मुगलों से संघर्ष किया और मराठा स्वराज्य को कायम रखा।[4]

औरंगजेब की मृत्यु के बाद मई, 1707 ई॰ में शाहू को मुगल कैद से मुक्त कर दिया गया। उस समय महाराष्ट्र की राजनीतिक समस्याएं बहुत प्रबल थी और उनका समाधान करना शाहू के लिए संभव न था। छत्रपति शिवाजी द्वारा स्थापित अष्ट–प्रधान व्यवस्था भी लुप्तप्राय हो चुकी थी।[5] शाहू को 17) वर्ष मुगलों के अधीन बंदी जीवन व्यतीत करना पड़ा था। इसलिए उनको प्रशासन संचालन का अनुभव अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था।

छत्रपति शाहू ने महाराष्ट्र की तत्कालीन समस्याओं के निदान के लिए 1713 ई॰ में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर नियुक्त किया। पेशवा पद का सृजन स्वयं छत्रपति शिवाजी ने किया और यह पद उनकी अष्ट प्रधान पद्धति में प्रमुख था। पेशवा के बाद अन्य मंत्रिपदों का भी पुर्नगठन किया गया, जिसमें बालाजी विश्वनाथ की सलाह से ही नियुक्तियां की गई ।[6] यह एक सुयोग ही कहा जा सकता है कि बालाजी विश्वनाथ के रूप में एक कुशल सेनानायक, प्रशासक, राजनीतिज्ञ तथा संगठनकर्त्ता का मराठा साम्राज्य के पटल पर अभ्युदय हुआ। जिसने छत्रपति शाहू की पूरी निष्ठा से सेवा की और मराठा साम्राज्य को संकटों से मुक्त किया। जिससे छत्रपति शिवाजी द्वारा स्थापित स्वराज्य का पुनरूत्थान शुरू हुआ।[7]

बालाजी विश्वनाथ ने मराठा राज्य का विस्तार किया, सशक्त जागीरदारी व्यवस्था को लागू किया और दिल्ली के मुगल दरबार में भी अपनी शक्ति को स्थापित किया। उसने महाराष्ट्र की वित्त–व्यवस्था को व्यवस्थित कर मराठा साम्राज्य को राष्ट्रीय गरिमा प्रदान की। बालाजी विश्वनाथ ने साम्राज्यी व्यवस्था के सभी उपकरण तथा सामग्रियां एकत्र कर ली जिससे मराठा साम्राज्य क्षेत्र–प्रसार के राजमार्ग पर अग्रसर हो गया।[8] मुगलों के साथ लम्बे संघर्ष के कारण महाराष्ट्र की दशा शोचनीय हो गई थी। ऐसे समय में महाराष्ट्र की रक्षा के लिए एक योग्य व्यक्ति की जरूरत थी जोकि शासन की शिथिलता को दूर करके साम्राज्य में शांति एवं मजबुती स्थापित कर सके। इस कठिन कार्य को सफलतापूर्वक करने का श्रेय बालाजी विश्वनाथ को है।[9] सबसे पहला कार्य सेना का संगठन करना था। क्योंकि उस समय छत्रपति शाहू के पास धनाभाव था और ऐसे में सेना का गठन एक कठिन कार्य था। बालाजी विश्वनाथ ने अपने मित्रों एवं महाजनों आदि से ऋण प्राप्त करके एक नई सेना को तैयार कर लिया। उन्होंने मराठा

साम्राज्य की आंतरिक अव्यवस्थाओं को व्यवस्थित किया। उसके बाद बालाजी विश्वनाथ ने दिल्ली की यात्रा की जोकि राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से मराठों के लिए महत्त्वपूर्ण रही। परिणामस्वरूप इसने मराठों की महत्त्वकांक्षाओं को नई दिशा और दृष्टिकोण प्रदान किया।[10] यह यात्रा आर्थिक रूप से भी मराठों के लिए लाभदायक रही, क्योंकि बालाजी विश्वनाथ को सैयद बन्धुओं से 50 हजार रुपये प्रतिदिन मिलते थे। अतः दिल्ली से लौटने पर बालाजी विश्वनाथ ने 30 लाख रुपये मराठा साम्राज्य के कोष में जमा कर दिए।[11] उसने छत्रपति शाहू की स्थिति को पूरी तरह से सुदृढ़ एवं व्यापक क्षेत्र में सम्मानित कराने हेतु मुगल सम्राट से छत्रपति के लिए स्वराज तथा चौथ एवं सरदेशमुखी वसूलने संबंधित सनदें प्राप्त की ।[12]

पेशवा बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु के बाद उनका पुत्र बाजीराव प्रमथ 17 अप्रेल, 1720 ई॰ को पेशवा के पद पर प्रतिष्ठित हुआ। बाजीराव प्रथम गृह एवं विदेश नीति की धाराओं से पूर्णतः परिचित था और पेशवा पद पर नियुक्ति के समय अन्य सभी व्यक्तियों से अधिक सक्षम भी था।[13] उन्हीं दिनों मुगल साम्राज्य अपनी आंतरिक अव्यवस्थाओं में उलझा हुआ था। अतः पेशवा बाजीराव प्रथम ने भारत की तत्कालीन अवस्था और मुगलों की दुर्बलता, अकर्मण्यता व नपुंसकता की ओर ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने मराठों की कर्मठता, ऊर्जा व सहासपूर्ण कार्यों पर जोर दिया और मुगलों के क्षेत्र में राज्य विस्तार करने की योजना बनाई। पेशवा बाजीराव प्रथम ने कहा कि– 'हिन्दुओं के देश से विदेशियों को बाहर खदेड़ने का तथा अमर कीर्ति प्राप्त करने का हमारे लिए यही उचित अवसर है।' तभी छत्रपति शाहू ने भावविभोर होकर कहा– 'तुम सुयोग्य पिता के महान पुत्र हो।'[14] पेशवा बाजीराव प्रथम की नीति के दो मुख्य तत्त्व थे– एक, दक्षिण में मराठा साम्राज्य की सुरक्षा एवं मराठा सर्वोच्चता की स्थापना, दूसरा, उत्तर भारत में मराठा शक्ति का प्रसार ।

उन्होंने छत्रपति शाहू को कहा कि वह छोटे लक्ष्यों की बात न सोचे। मुगल साम्राज्य की ओर संकेत करते हुए पेशवा बाजीराव ने कहा कि– 'सुखे वृक्ष की धड़ पर प्रहार करे, डालें अपने आप गिर जाएगी।'[15] उसने 1730 ई॰ में छत्रपति शाहू के विरोध के बाद भी अपना मुख्यालय सतारा से हटाकर पूना में स्थापित कर लिया।[16] पेशवा बाजीराव ने मराठा संघ का पुनर्गठन किया। उसके द्वारा पुनर्गठित मराठा संघ में महादजी सिंधिया, मल्हराव होल्कर, उदाजी पंवार आधार स्तम्भ थे। इन्होंने पेशवा बाजीराव को ही अपना एकमात्र स्वामी माना और उसी की आज्ञा पर मराठा विजयों के कार्य को सम्पन्न किया ।[17] उसने अपने कार्यकाल के 20 वर्षों

में मराठा प्रभुतव को सर्वत्र स्थापित कर दिया था। पेशवा बाजीराव प्रथम की इन प्रसारात्मक गतिविधियों के कारण ही दिल्ली के मुगल दरबार के स्थान पर छत्रपति शाहू का दरबार राजनीतिक आकर्षण का केन्द्र बन गया था। अब भारत के मानचित्र पर मराठा शक्ति के कई केन्द्र उभर आए थे। निरंतर युद्धों में व्यस्त रहने वाले पेशवा बाजीराव प्रथम 25 अप्रैल, 1740 ई॰ को चल बसे।[18]

पेशवा बाजीराव प्रथम के बाद उनके बड़े पुत्र बालाजी बाजीराव को पेशवा के पद पर नियुक्त किया गया। इनको नाना साहब के नाम से भी जाना जाता है। नाना साहब अपने पिता की तरह महान योद्धा तो नहीं था लेकिन राजनयिक मामलों में एक विशिष्ट राजनेता था।[19] उसने दक्षिण एवं मध्य भारत ही नहीं बल्कि उत्तर भारत में भी मराठा शक्ति का प्रसार किया। इसके समय में मराठा साम्राज्य ने राजपूताना, दिल्ली, अवध तथा पंजाब में लाहौर तक अपनी सैन्य एवं प्रशासनिक शक्ति को स्थापित किया था। मल्हरराव होल्कर, रघुनाथ राव, सखाराम बापु, दत्ता जी सिंधिया तथा सदाशिवराव भाऊ आदि पेशवा बालाजी बाजीराव के प्रमुख मराठा सरदार एवं सेनानायक थे।[20] 1752 ई॰ में अफगान शासक अहमदशाह अब्दाली ने लाहौर पर अधिकार कर लिया था। उसके बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए मुगल सम्राट अहमद शाह एवं वजीर सफदरजंग ने मराठों के साथ समझौता किया।[21] इस समझौते के अनुसार मराठों को सिंध, पंजाब व दोआब से चौथ वसूल करने का अधिकार मिल गया था। पेशवा बालाजी बाजीराव ने मराठा साम्राज्य की वित्तीय स्थिति में बहुत सुधार किए। उसने अपने पिता की साम्राज्य विस्तार नीति को आगे बढ़ाते हुए मार्च 1758 ई॰ में सरहिंद तथा अप्रैल, 1758 ई॰ में लाहौर पर अधिकार किया।[22] मराठा सेनाओं ने सिंधु नदी के तट पर स्थित अटक पर मराठा ध्वज फहरा दिया और पेशवा बालाजी बाजीराव को सूचना भेजी कि– "मराठों ने अपने घोड़ों को सिंधु नदी में स्नान कराया है।" इस प्रकार पेशवाओं के नेतृत्व में मराठा साम्राज्य उत्तर में अटक तथा दक्षिण में बहुत बड़े भूभाग पर अपना अधिपत्य स्थापित कर चुका था। पेशवा शक्ति के नेतृत्व में मराठा साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया था। इस समय मराठे एक बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित हो गए थे। मराठों ने जो महत्त्व प्राप्त किया व प्रेरणादायक एवं गौरवपूर्ण था।[23]

14 जनवरी, 1761 ई॰ को पानीपत के मैदान में मराठा सेना और अहमदशाह अब्दाली के मध्य युद्ध हुआ। इस युद्ध में मराठा सेना की हार हुई और अब्दाली को भी काफी जान माल का

नुकसान हुआ। युद्ध से अगले दिन युद्ध क्षेत्र का निरीक्षण किया गया तो उसमें 32 बड़े–बड़े लाशों के ढेर मिले। इसके अलावा मराठा शिविर व जंगल में लाशें बिखरी पड़ी थी।[24] इस युद्ध में मराठा साम्राज्य भारी जान माल व प्रतिष्ठा की हानि हुई। पेशवा बालाजी बाजीराव को गहरा आघात पहुंचा । जिससे 23 जून, 1761 ई॰ को पेशवा का देहांत हो गया।[25] पानीपत की पराजय से दक्षिण में मराठा शत्रुओं का उदय होने लगा था। वे इस अवसर का लाभ उठाना चाहते थे। इस प्रकार मराठा साम्राजय जिसकी स्थापना छत्रपति शिवाजी ने की थी और पेशवा शक्ति ने विस्तार किया था, उसको पानीपत के युद्ध में भारी क्षति का सामना करना पड़ा। मराठों को अब तक अजेय माना जाता था और मुगल साम्राज्य के वो संरक्षक थे, सब हाथ से निकल गया लेकिन फिर भी उनकी वीरता प्रशंसनीय रही।

बालाजी बाजीराव के पश्चात् उनके 17 वर्षीय पुत्र माधव राव को पेशवा के पद पर नियुक्त किया गया । छत्रपति शाहू की मृत्यु हो चुकी थी। अब छत्रपति की गद्दी पर रामराजा आसीन था। यह छत्रपति शिवाजी के दूसरे पुत्र राजाराम का पुत्र था।[26] पेशवा माधव राव प्रथम के सामने बहुत कठिन परिस्थितियां थी क्योंकि हाल ही में पानीपत के पराजय से समस्त महाराष्ट्र में शोक एवं निराशा की लहर छाई हुई थी और साथ ही दक्षिण में मराठा शत्रुओं ने सिर उठा लिए थे। पेशवा माधव राव प्रथम ने सबसे पहले दक्षिण में अभियान की योजना बनाई। क्योंकि हैदराबाद के निजाम ने पूना पर आक्रमण की तैयारी कर ली थी। तरूण पेशवा ने शीघ्र 70 हजार सैनिकों को एकत्र कर निजाम के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।[27] उन्होंने खुले मैदान में युद्ध न कर निजाम को झड़पों से परेशान करना शुरू किया। इससे निजाम की सेना का हौंसला टूट गया और वे परास्त हो गए। पेशवा माधव राव प्रथम दक्षिण में पर्याप्त धन वसूल कर पूना वापिस आ गए। पूना पहुंचने पर पेशवा के चाचा रघुनाथ राव ने बखेड़ा खड़ा कर दिया। वह प्रशासन के संचालन में पूरे हिस्से की मांग करने लगा।[28] पेशवा माधव राव ने अपनी कुशलता से रघुनाथ राव के षडयंत्रों को दबाया और मराठा राज्य को विभाजित होने से बचा लिया। 10 अगस्त, 1763 ई॰ में राक्षस भूवन की लड़ाई में पेशवा माधव राव ने अपने पराक्रम, धैर्य और वीरता का अच्छा प्रदर्शन किया। जिससे मुगलों की हार हुई और मराठों को बहुत सा पशुधन, हाथी तोप व युद्ध सामग्री प्राप्त हुई।[29]

राक्षस भूवन की विजय से प्रमाणित हो गया कि पानीपत की पराजय से मराठा का अंत नहीं हुआ है। उसमें अब भी शक्ति विद्यमान है जिसके बल पर भगवा ध्वज भारत के सुदूस्थ

स्थानों पर लहरा दिया गया । निजाम के बाद दूसरा शत्रु मैसूर का शासक हैदरअली था। पेशवा माधवराव ने हैदरअली को भी हरा दिया और अपना क्षेत्र विस्तार किया। उसने मराठा साम्राज्य के आंतरिक शत्रुओं एवं घरेलू झगड़ों को कुशलतापूर्वक निपटाया और मराठा साम्राज्य को उन्नतिशील बनाए रखा। पेशवा माधव राव प्रथम को जब भी राजनैतिक विवादों से फुर्सत मिलती तो वह अपना ध्यान राज्य प्रबंध में लगाता था। उनकी हमेशा यही इच्छा थी कि उसकी प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट न हो। पेशवा माधव राव सैनिक दृष्टि से एक महान योद्धा एवं प्रबंधक था।[30] उन्होंने सैन्य बल को मजबूत बनाने के लिए बड़ी संख्या में अरब, अबिसिनिस व सिखों को भर्ती किया। गार्दी सैन्य अधिकारी सुमेर सिंह, अली मर्दान खान और शेर सिंह सिख आदि को सैनिक भर्ती करने का आदेश दिया गया।[31]

सैन्य सामग्री की आत्मनिर्भरता के लिए राज्य में तोप व गोले बनाने के कारखाने लगवाए। क्योंकि पहले ये सामान यूरोपियन लोगों से खरीदा जाता था। उन्होंने किलों की मरम्मत की तरफ भी विशेष ध्यान दिया। अधिकारियों को गांव से खेती का विस्तार करने का भी आदेश दिया गया था।[32] उसके कार्यकाल में मराठा साम्राज्य सैन्य सामग्री के मामले में आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हुआ जिससे यूरोपियनों की निर्भरता से मुक्ति मिली। पेशवा माधवराव ने अनेक जनकल्याणकारी व्यवस्थाएं स्थापित की। उसने बेगारी की प्रथा को समापत कर दिया और वह किसानों की शिकायतों को अवश्य सुनता था। उनका समाधान करने का उचित प्रबंध भी करता था। जेम्स ग्रांट डफ के अनुसार– पेशवा माधव राव के समय मराठा देश अपनी उर्वरता के अनुपात में भारत के किसी भी अन्य हिस्से की तुलना में अधिक सम्पन्न था।

अपने घरेलू झंझटों से मुक्त होने के बाद पेशवा माधवराव ने अपना ध्यान उत्तर भारत की ओर लगाया। उसने सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों के नेतृत्व में उत्तर की ओर सेना भेजने का निर्णय लिया। इस सैन्य दल ने राजपुताना, जाट राज्य, पठान व रूहेलों से संघर्ष किया और सफलता प्राप्त की। मुगल बादशाह शाह आलम जोकि अंग्रेजों के संरक्षण में था। उसको 1771 ई॰ में विसाजी कृष्ण बिनीवाले व विशाल मराठा सेना के संरक्षण में दिल्ली लाया गया । पानीपत की पराजय के बाद फिर से उत्तर भारत में मराठा प्रतिष्ठा को स्थापित किया गया।[33] पेशवा माधव राव प्रथम की 28 वर्ष की युवा अवस्था में ही मृत्यु हो गई जिसका मराठा साम्राज्य पर गहरा आघात लगा।

पेशवा माधवराव प्रथम निसंतान थे, इसलिए उनके छोटे भाई नारायण राव को पेशवा के वस्त्र छत्रपति द्वारा भेंट किए गए। पेशवा नारायण राव का कार्यकाल 9 मास का रहा। उसकी हत्या उसके चाचा रघुनाथ राव ने करा दी। क्योंकि रघुनाथ राव पेशवा बनने के लिए आतुर था। मृत पेशवा नारायण राव की पत्नी गंगा बाई ने 17 अप्रैल, 1774 ई॰ को पुत्र को जन्म दिया।[34] समस्त महाराष्ट्र में शांति व खुशी की धारा प्रवाहित हो गई। मराठा साम्राज्य के वयोवृद्ध सरदारों, सखाराम बापू, नानाफड़नवीस आदि ने बारह भाई परिषद का गठन किया जिसने मृत पेशवा नारायण राव के नवजात पुत्र सवाई माधव नारायण राव के नाम से साम्राज्य का संचालन किया । इस परिषद के सर्वेसर्वा नाना फड़नवीस थे।[35]

रघुनाथ राव के षडयंत्रों के कारण अंग्रेजों को भी मराठा साम्राज्य में हस्तक्षेप करने का अवसर मिला, जिसका वे बहुत दिनों से इंतजार कर रहे थे। अंग्रेजों ने मराठा साम्राज्य के विरूद्ध युद्ध शुरू कर दिया। ताले गांव के स्थान पर अंग्रेजों की हार हुई और उन्हें मराठों से संधि की याचना करनी पड़ी। 16 जनवरी, 1779 ई॰ को बड़गांव की संधि हुई। शर्तें जब तक पूरी न हो जाए तब तक जामिन के तौर पर दो अंग्रेज अफसरों को मराठा शिविर में नजरबंद रखा गया।[36] अंग्रेज तालेगांव की हार से तिलमिला उठे उन्होंने दोबारा मराठों से युद्ध शुरू कर दिया। मराठों ने वीरता से सामना किया और 24 फरवरी 1783 ई॰ को सालबाई की संधि द्वारा युद्ध समाप्त किया। इसके बाद 20 वर्ष तक अंग्रेजों ने मराठों से कोई युद्ध नहीं किया, वे उनकी संगठन शक्ति से परिचित हो चुके थे। मराठा सरदार महादजी सिंधिया ने अब अपना ध्यान उत्तर की ओर लगाया। उसने मुगल सम्राज्य से दो सनदें प्राप्त की। एक के अनुसार पेशवा को साम्राज्य का उपसंरक्षक नियुक्त किया गया और दूसरे के अनुसार स्वयं पेशवा के नायक के तौर पर सेना का संचालन । महादजी सिंधिया को आगरा व दिल्ली के सूबे सेना के खर्च के लिए दे दिए गए। परिणामस्वरूप मराठा साम्राज्य की उत्तर भारत में फिर से प्रतिष्ठा कायम हो गई। महादजी सिंधिया ने मराठा साम्राज्य के प्रसार एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में तथा सेना के युरोपियकरण में सदाशिवराव भाऊ के अपूर्ण कार्य को सफलता के बिंदू पर पहुंचा दिया था।[37]

1794 ई॰ में महादजी की मृत्यु और 1795 ई॰ में पेशवा सवाई माधव नारायण की मृत्यु के बाद मराठा साम्राज्य में अराजकता फैलने लगी थी। मराठों के मैक्यावली कहे जाने वाले राजनीतिज्ञ नाना फड़नवीस भी 1800 ई॰ को चल बसे । इसी संकट व अराजकता के दौर में

1802 ई॰ में पेशवा बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों के साथ बसीन की संधि की ओर मराठा स्वतंत्रता का अंत कर दिया।

निष्कर्ष :

उपरोक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते है कि छत्रपति शिवाजी द्वारा स्थायित मराठा साम्राज्य (स्वराज्य) को पेशवाओं ने आगे बढ़ाया। छत्रपति शिवाजी के समय मराठा साम्राज्य की सीमा दक्षिण भारत तक ही सीमित थी लेकिन पेशवा काल में भगवा ध्वज उत्तर में अटक तक फहर गया था। दिल्ली के मुगल दरबार में मराठों की धाक जम गई थी। पेशवा बालाजी विश्वनाथ ने मराठा साम्राज्य को व्यवस्थित एवं छत्रपति शाहू को प्रतिष्ठित किया। पेशवा बाजीराव ने अपने सैन्य अभियानों से मराठा शक्ति का विस्तार किया और मुगल साम्राज्य के स्थान पर मराठा साम्राज्य शक्तिशाली बनकर उभरा। पेशवा काल में बृहत्तर भारत पर मराठों का अधिकार था और वे बहुत बड़े क्षेत्र से चौथ वसूलते थे।

संदर्भ सूची :

1. सतीश चंद्र मित्तल, मराठा शक्ति का उदय, दिल्ली, 1977, पृ॰ 1
2. अनिल माधव दवे, शिवाजी और सुराज, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015, पृ॰7
3. डॉ॰ एस॰ सी॰ मिश्रा एवं प्रताप सिंह, मराठों का इतिहास, जयपुर, पृ॰ 113
4. राजाराम व्यंक्टेश नंदकर्णि, मराठा राज्य का उदय और अस्त, दिल्ली, 1976, पृ॰ 133
5. एच॰ एन॰ सिन्हा, राइज ऑफ द पेशवाज, इलाहाबाद, 1954, पृ॰ 7
6. वही, पृ॰ 42
7. डॉ॰ एस॰सी॰ मिश्र एवं प्रताप सिंह, उपर्युक्त, पृ॰ 166
8. गोविंद सखाराम सरदेसाई, मराठों का नवीन इतिहास, भाग–2, आगरा, 1972, पृ॰ 65–68
9. श्री निवास बालाजी हर्डिकर, नाना साहब पेशवा, दिल्ली, 1969, पृ॰ 5
10. गोविंद सखाराम सरदेसाई, उपर्युक्त, पृ॰ 48
11. डॉ॰ एस॰सी॰ मिश्र एवं प्रताप सिंह, उपर्युक्त, पृ॰ 165
12. जेम्स ग्रांट डफ, मराठों का इतिहास (हिन्दी अनुवाद कमलाकर तिवारी), इलाहाबाद, 1965, पृ॰ 409
13. डॉ॰ वी॰जी॰ डिघे, पेशवा बाजीराव I एंड मराठा एक्सपेंसन, पृ॰ 4
14. राजाराम व्यंक्टेश नंदकर्णि, उपर्युक्त, पृ॰ 147
15. जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ॰ 275
16. डॉ॰ सलैन्द्र नाथ सैन, एडमिनिस्ट्रेशन सिस्टम ऑन द मराठाज, कलकत्ता, 1925, पृ॰ 170
17. डॉ॰ एस॰सी॰ मिश्र एवं प्रताप सिंह, उपर्युक्त, पृ॰ 209
18. जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ॰ 275
19. जादूनाथ सरकार, ए स्टडी ऑफ एटीन्न सेंचुरी इंडिया, वोल्यूम–I, पोल्टिकल, पृ॰ 219
20. आर॰सी॰ मजूमदार एवं अन्य, एन एडवान्स हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, न्यूयार्क, 1960, पृ॰ 536–44
21. बुद्ध प्रकाश, हरियाणा का इतिहास एक सर्वेक्षण, कुरुक्षेत्र, 1989, पृ॰ 60
22. श्री कृष्ण ओझा, मुगलकालीन भारत, पृ॰ 296
23. जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ॰ 382
24. पंडित काशीराज, पानीपत की लड़ाई (अंग्रेजी अनुवाद जेम्स ब्राउन), बॉम्बे, 1926, पृ॰ 46
25. जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ॰ 398
26. शंकर नाथ जोशी, भाऊसाहेबांची बखर, पुणे, 1959, पृ॰ 146
27. प्रताप सिंह, आधुनिक भारत (1756–1858), जयपुर, 2000, पृ॰ 41
28. राजाराम व्यंक्टेश नंदकर्णि, उपर्युक्त, पृ॰ 200
29. गोविंद सखाराम सरदेसाई, उपर्युक्त, पृ॰ 503
30. जेम्स ग्रांट डफ, उपर्युक्त, पृ॰ 429
31. कै॰ राव बहादुर चिमणाजी वाड, पेशवा डायरी–9, बम्बई, 1911, पृ॰ 336
32. अनिल चंद्र बनर्जी, पेशवा माधव राव प्रथम, कलकत्ता, 1943, पृ॰ 241–42
33. जादूनाथ सरकार, फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, भाग–II, कलकत्ता, 1934, पृ॰ 554–55
34. मोस्टीन डायरी, द थर्ड इंग्लिश एम्बैंसी टू पूना, बम्बई, 1934, पृ॰ 12
35. गोविंद सखाराम सरदेसाई, उपर्युक्त, पृ॰ 32
36. डॉ॰ माथुरा लाल शर्मा, मराठों का संक्षिप्त इतिहास, ग्वालियर, 1968, पृ॰ 368
37. राजाराम व्यंक्टैश नंदकर्णि, उपर्युक्त, पृ॰ 219